

॥ श्री. ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

455



स्वोपज्ञ'परिमला'ख्यव्याख्योपेता

श्रीमन्महेश्वरानन्दप्रणीता

महार्थमञ्जरी

'भारती' भाषाभाष्योपेता

डॉ० श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'

एम०ए०, एम०एड० व्याकरणाचार्य

पी-एच०डी० डी०लिट्



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

विषयानुक्रमणी



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
✦ महाप्रकाश गुरु की वन्दना	३	✦ आणव मल	४९
✦ गुरुतत्त्व की महिमा	८	✦ मायीय मल	४९
✦ अभिधान-अभिधेयवाद	१३	✦ कर्म मल	७९
✦ महाप्रकाशात्मा परमशिव का स्वरूप	१४	✦ आत्मा की समस्त प्राणियों में स्फुटता	५४
✦ विमर्श शक्ति और माया	१८	✦ प्रकाशरूप शिव द्वारा समस्त मलों का ध्वंस	५७
✦ विमर्श शक्तिसमवेत परमशिव	१९	✦ प्रकाश और कर्तृत्व का सामरस्य	६४
✦ माया का स्वरूप	१९	✦ सकल	६५
✦ विमर्श का स्वरूप	२०	✦ प्रलयाकल	६६
✦ प्रकाश-विमर्श	२१	✦ विज्ञानाकल	६६
✦ शिव एवं शक्ति का अभेद	२२	✦ विमर्श और विश्वविस्तार	६७
✦ शक्ति और विमर्श	२२	✦ विमर्श-स्वरूप	६८
✦ विमर्श शक्ति और स्वातन्त्र्य शक्ति	२२	✦ निगमन	७०
✦ विमर्श की अवस्थायें	२६	✦ स्वात्मविश्रान्ति	७१
✦ सांख्य का सत्कार्यवाद और आगमिक सर्वविमर्शवाद	२६	✦ परासंवित्, प्रकाश एवं विमर्श	७२
✦ आत्मा की विश्वमूलकता तथा उसकी स्वतःप्रामाणिकता	२७	✦ सत्, चित् एवं आनन्द का अन्तःसम्बन्ध	७४
✦ शिव की सार्वत्रिक स्फुरता	३१	✦ विमर्शोन्मेष और जगत्	७५
✦ शिवतत्त्व (या आत्मसत्ता) की अनिर्वचनीयता	३४	✦ शैवागम के छत्तीस तत्त्व	७७
✦ अनात्मोपासना की दिशा में साफल्याप्ति के प्रति शंकास्पदता	३६	✦ विमर्श के दो पृथक्-पृथक् रूप	७८
✦ विधि-निषेध के नियम या सिद्धान्त	३९	✦ परमस्वच्छन्द शिव और उनकी शक्तियाँ	८०
✦ विधि-निषेध	४२	✦ शक्ति के विभिन्न रूप	८२
✦ आत्म-पर्यालोचना के अभाव के दुष्परिणाम	४२	✦ शक्ति का स्वरूप	८५
✦ शिव की शक्तियाँ और उनका पशुओं में संकोच	४८	✦ औन्मुख्य का स्वरूप	८७
		✦ शिव का स्वभाव	९०
		✦ आरम्भवाद एवं असत्कार्यवाद का खण्डन	९१

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप	९१	+ आवरणद्वय	१२२
+ सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप	९२	+ महामाया और मायाशक्ति	१२३
+ सप्त प्रमाता	९३	+ वेदान्तियों की माया-	
+ भगवति चिति का संकोच—		सम्बन्धिवी दृष्टि	१२४
प्रमातृत्व	९४	+ माया की शक्तियाँ	१२५
+ सदाशिव तत्त्व	९६	+ महामाया	१२६
+ शिवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के		+ माया शक्ति का प्रभाव	१२६
विमर्श : ज्ञान की अवस्था	९७	+ माया के विभिन्न लक्षण	१२६
+ मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श	९८	+ भेदवाद और उसका प्रत्याख्यान	१२९
+ सादाख्य तत्त्व	९९	+ अद्वैतवाद की पुष्टि	१३०
+ शिवतत्त्व का स्पन्दन	१०१	+ अवस्थात्रय	१३०
+ अहं और इदं की अनुभूति	१०१	+ परमशिव का स्वरूप	१३०
+ सत्ता एवं विकास की भूमिकायें	१०३	+ महार्थमञ्जरीकार और विज्ञानभैरव	१३१
+ शुद्ध अध्वा : ५ तत्त्वों		+ परमात्मा शिव का सर्वकर स्वरूप	१३२
का विकास	१०३	+ शान्त ब्रह्मवाद का खण्डन	१३३
+ प्रमेय एवं प्रमाता	१०३	+ इच्छा-ज्ञान-क्रियासामञ्जस्यवाद	१३४
+ सदाशिव एवं ईश्वर में भेद	१०५	+ परमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार	१३४
+ ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप	१०५	+ आभासन, शक्ति, विमर्शन	१३५
+ ज्ञान	१०७	+ स्पन्दशास्त्र और परमात्मा	१३५
+ सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम	१०७	+ परमात्मा शिव की शक्तियाँ	१३६
+ सद्विद्या	१०८	+ पूर्णता	१३७
+ अहं इदम्	११२	+ परमात्मा की पूर्णता	१३८
+ शुद्धाध्वा तत्त्व	११२	+ ज्ञानों के विभिन्न स्तर	१३८
+ संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ	११२	+ शुद्धाध्वा के तत्त्वों का ज्ञान	१३८
+ शुद्ध विद्या का स्वरूप	११३	+ परमशिव की शक्तियाँ	१३९
+ परापर दशा एवं शुद्ध विद्या	११५	+ परमशिव का शक्तिपञ्चक	१४०
+ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के		+ शक्ति का औन्मुख्य	१४०
भावाभाव	११५	+ चित् शक्ति	१४१
+ सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय	११६	+ सर्वचैतन्यवाद	१४१
+ अहन्ता एवं इदन्ता	११७	+ आनन्द शक्ति	१४२
+ मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका		+ औन्मुख्य	१४२
स्वरूप	११७	+ आनन्दशक्ति एवं औन्मुख्य	
+ स्वातन्त्र्य शक्ति	१२१	में भेद	१४३
+ मायातत्त्व	१२२	+ इच्छाशक्ति	१४३

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ ज्ञानशक्ति	१४४	+ त्रिक दर्शन के अनुसार प्रकृति	
+ क्रियाशक्ति	१४५	का स्वरूप	१८३
+ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ		+ सांख्य एवं त्रिक दर्शन में प्रकृति-	
का रहस्य	१४७	विषयक धारणा में अन्तर	१८४
+ स्पन्द, नाद, एजन् एवं		+ त्रिक दर्शन के छत्तीस तत्त्व	१८४
इच्छा शक्ति	१४९	+ प्रकृति के पर्याय	१८५
+ महात्रिपुरसुन्दरी और शक्तियाँ	१५०	+ गुणत्रय की वृत्तियाँ	१८५
+ प्रथम स्पन्द, स्पन्दन एवं ओम्	१५१	+ सांख्यशास्त्र के तत्त्व	१८७
+ एकोऽहं बहु स्याम् = प्रथम		+ प्रकृति का पञ्चभूतात्मक	
स्पन्द = आद्य इच्छा	१५२	स्थूल स्वरूप	१८७
+ क्षुब्धता एवं अक्षुब्धता		+ स्थूल महाभूतों की उत्पत्ति	
इच्छा शक्ति	१५३	का क्रम	१८८
+ इच्छाशक्ति के भेद	१५५	+ त्रिक दर्शन का पुरुष	१८९
+ सोम-सूर्य-अग्निरूपा शक्ति	१५५	+ त्रिक दर्शन की प्रकृति	१८९
+ ज्ञानशक्ति	१५६	+ अन्तःकरण के व्यापार	१९५
+ ज्ञानशक्ति का स्वरूप	१५६	+ मन, बुद्धि और अहंकार	१९६
+ आनन्द का बहिर्मुखत्व	१५८	+ करणों की कार्य-प्रक्रिया	१९७
+ शक्तिपञ्चक	१५९	+ अन्तःकरण की कार्यप्रणाली	१९७
+ भगवती के विभिन्न रूप	१६०	+ ज्ञान की प्रक्रिया	१९८
+ पञ्चकञ्चुक एवं पाश	१६३	+ न्यायशास्त्र में ज्ञान की प्रक्रिया	१९९
+ परमात्मा की पाँच शक्तियाँ	१६३	+ विश्व के मूलभूत पदार्थ	१९९
+ पशु के पाँच कञ्चुक	१६३	+ पारमात्मिक विषयालोक और	
+ जीवरूप पशु के कञ्चुक	१६५	ज्ञानेन्द्रियाँ	२०१
+ पञ्चशक्ति एवं पञ्चकञ्चुक	१६५	+ ज्ञानेन्द्रियों के प्रकार	२०३
+ शम्भु की अभिनयात्मक		+ परमात्मा की कर्मेन्द्रियाँ और	
पुरुषावस्था	१६६	जीवों में गति-सञ्चार	२०३
+ पुरुष और परमात्मा की		+ लोकत्रय के क्रीड़ाङ्गण के क्रीड़ा-	
एकरूपता	१७४	कारी परमेश्वर का स्वरूप	२०५
+ शिव एवं ऐन्द्रजालिक	१७६	+ पञ्चमहाभूत और पारमात्मिक	
+ शाम्भवी शक्ति के अनेक रूप	१७७	माधुर्य—पारस्परिक अन्तःसम्बन्ध	२०७
+ प्रकृति एवं शम्भवी शक्ति में		+ पञ्चभूतों और परमशिव के	
ऐकात्म्य	१८२	माधुर्य में अन्तर	२१०
+ सांख्य और त्रिक दर्शन :		+ भगवान् का माधुर्य	२१०
भेदक तत्त्व	१८३	+ सर्वसर्वात्मकतावाद	२११

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ सर्वसामरस्यवाद	२१२	+ मन्त्रेश्वर और मन्त्रमहेश्वर	
+ शाम्भव शक्ति एवं विश्वोत्ता- सात्मक व्यापार—पारस्परिक		प्रमाताओं में भेद	२३६
अन्तःसम्बन्ध	२१३	+ प्रमाताओं की संख्या	२३६
+ स्वातन्त्र्य शक्ति के रूपान्तर	२१५	+ भुवन	२३८
+ शक्तिवाद	२१६	+ आनन्दवाद	२४१
+ शक्ति के परिणाम	२१६	+ उन्मेष-निमेषवाद	२४१
+ स्वातन्त्र्य शक्ति का विलास	२१७	+ षडध्व या अध्वषट्क	२४१
+ परिणामवाद	२१८	+ शिव-शक्ति की अभिन्नता	२४४
+ सप्तत्रिंशत्तत्त्व	२१८	+ विश्वचित्र एवं विश्वचित्रकार	२४५
+ अध्वषट्क का स्वरूप	२२०	+ पारमात्मिक शक्ति की असीमता	२४६
+ अध्वट्क	२२२	+ परमशिव की निमेषोन्मेष नामक	
+ शुद्धाध्वा	२२२	दोनों दशाओं में समान व्यापकता	
+ अशुद्धाध्वा	२२२	एवं विराट् प्रसार	२५१
+ अध्वषट्क एवं शुद्धाशुद्ध सृष्टि	२२३	+ शिव की व्यापकता एवं	
+ अध्वा के विभिन्न रूप	२२४	अध्वप्रसार	२५२
+ मार्ग के प्रकार	२२५	+ विश्वोन्मेषावस्था	२५४
+ शैव और शाक्तों में भेद	२२६	+ निमेषावस्था	२५४
+ काल के भेद	२२६	+ वेदान्त का खण्डन	२५४
+ कला का जन्म	२२६	+ ज्ञानकला एवं उसके द्वारा लोक-	
+ पञ्चकलायें और उनका स्वरूप	२२८	त्रय की अभिव्यक्ति	२५५
+ तत्त्वों का विभाजन-विधान	२२८	+ भावाभाव—दोनों में संवित् का	
+ भुवनों के प्रकार	२२८	प्रसार	२५८
+ परसंवित्	२३१	+ बहुत्व में एकत्व का सूत्र	२६२
+ पशुश्रेणी	२३२	+ शरीर में परमात्मा की व्यापकता	२६४
+ पशु के भेद	२३२	+ पूजा का तात्त्विक स्वरूप	२६७
+ विद्येश्वरों के भेद	२३२	+ पीठतत्त्व और उसका स्वरूप	२६८
+ मन्त्रेश्वर	२३२	+ प्राणमय कोश	२६८
+ मन्त्रमहेश्वर	२३३	+ पीठों की श्रेणियाँ	२६९
+ शिवतत्त्व एवं शक्तितत्त्व	२३३	+ कामरूप पीठ	२७०
+ स्वामीगण	२३३	+ पूर्णागिरि पीठ	२७०
+ सप्त प्रमाता एवं विद्येश्वर	२३४	+ उड्डीयान पीठ	२७०
+ मन्त्रेश्वर वर्ग	२३४	+ जालन्धर पीठ	२७१
+ मन्त्रेश्वर और मन्त्रमहेश्वर	२३५	+ परमेश्वर की पूजन-प्रक्रिया	२७२
		+ परमेश्वर के पूजन की प्रक्रिया	२७३

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ जप का स्वरूप	२७५	+ खेचरी मुद्रा और उसका स्वरूप	३०४
+ ध्यान का स्वरूप	२७५	+ वर्णक्रम	३०४
+ योग का स्वरूप	२७५	+ शाम्भव शिद्ध के लक्षण	३०५
+ ध्यान-भावनात्मक समावेशात्मक स्वरूप	२७६	+ संवित् स्वभाव	३०६
+ जीवन्मुक्ति का स्वरूप	२७६	+ परमशिव के कृत्यों में शक्तियों की अनुस्यूतता तथा उनकी संख्या	३०८
+ अर्चना का रहस्य	२७७	+ प्रथापञ्चक	३१२
+ पाँच शक्तियाँ	२७८	+ दस शक्तियाँ	३१२
+ भासा शक्ति	२७८	+ स्थितिक्रम	३१३
+ वाह	२८०	+ इन्द्रियों की बारह स्फुरतायें	३१४
+ शरीररूपात्मक महापीठ	२८१	+ युगनाथ	३१४
+ पञ्चवाह	२८६	+ संहति-क्रम	३१६
+ उपासनाक्रम	२८७	+ शक्तियों की स्थिति	३१७
+ व्योमवामेश्वरी शक्ति	२८८	+ अवस्थाचतुष्टय के युग्म	३१७
+ खेचरी शक्ति	२८८	+ विकल्पातीता भासा शक्ति का स्वरूप	३१८
+ दिक्चरी शक्ति	२८८	+ भासा शक्ति का स्वरूप	३२०
+ गोचरी शक्ति	२८८	+ प्रतिबिम्बवाद का खण्डन	३२२
+ भूचरी शक्ति	२८८	+ भासा शक्ति और उसका स्वरूप	३२४
+ पारमेश्वरी शक्ति के वागात्मक रूप	२८९	+ तिरोधान	३२५
+ स्पन्दकारिका के अनुसार शक्तिचक्र	२८९	+ अनुग्रह	३२५
+ पतिभूमिका में अवस्थित शक्तियाँ	२९०	+ सृष्टि से भासापर्यन्त सृजन	३२६
+ शक्तिवर्ग की द्विमुखी प्रवृत्ति	२९१	+ जड़ ब्रह्मवादियों का सिद्धान्त	३२६
+ वाणियों का मूल स्वरूप	२९२	+ पूजा एवं पूजा के सारभूत तत्त्व	३२८
+ पीठतत्त्व	२९५	+ यथार्थ पूजा का स्वरूप	३३२
+ वृन्दचक्र का स्वरूप	२९५	+ पूजा के दो स्वरूप	३३२
+ वृन्दचक्र	३०२	+ देवता का स्वरूप	३३२
+ सिद्धों की संख्या	३०२	+ सामान्य जनों की अपरा पूजा का स्वरूप	३३३
+ मुद्राविज्ञान और उसका स्वरूप	३०२	+ पूजा-विधि	३३३
+ क्रोधनी मुद्रा का स्वरूप	३०३	+ औपचारिक एवं यथार्थ पूजा में अन्तर	३३५
+ भैरवी मुद्रा और उसका स्वरूप	३०३	+ चिद्धूमि में विश्रान्ति ही पूजा	३३६
+ लेलिहाना मुद्रा और उसका स्वरूप	३०४	+ समयाचारियों का पूजा-विधान	३४१

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ पञ्चविध साम्य	३४२	+ विद्या	३६५
+ योगिनीहृदयोक्त पूजा के प्रकार	३४२	+ राग	३६५
+ परा पूजा	३४२	+ काल	३६६
+ परापरा पूजा	३४३	+ नियति	३६६
+ अपरा पूजा	३४३	+ प्रकृति	३६६
+ सहस्रदल कमल की स्थिति	३४५	+ मलत्रय	३६६
+ त्रिपुरोपासना	३४८	+ कञ्चुक	३६६
+ प्राणायाम का यथार्थ स्वरूप	३४८	+ आणव मल के प्रकार	३६७
+ प्राणायाम	३५०	+ स्वातन्त्र्यात्मा चित् शक्ति	३६७
+ प्राणायाम के भेद	३५०	+ भगवती संवित् का आत्मगोपन	
+ प्राणायाम का फल	३५०	व्यापार	३६८
+ प्राणायाम-साधना के फल	३५०	+ संवित् शक्ति का अवरोहण क्रम	३६८
+ शुद्धि के उपाय	३५५	+ आरोहण के उपाय	३६८
+ मलत्रय का उन्मूलन	३५६	+ अनुपायतत्त्व	३६८
+ शोष का स्वरूप	३५६	+ अभिनवगुप्तपाद और अनुपाय	३७१
+ दाह का स्वरूप	३५७	+ उपायों का क्रम	३७२
+ आप्लावन का स्वरूप	३५७	+ बन्धन और मल	३७३
+ मल का शोष और बुद्धि की आवश्यकता	३५८	+ बन्धन का स्वरूप	३७३
+ संसारान्कुरकारण	३५९	+ अज्ञान के दो रूप	३७४
+ मल के विभिन्न स्वरूप एवं पक्ष	३५९	+ मालिनीविजयोत्तरतन्त्र और समावेश	३७४
+ मलों के प्रकार	३६०	+ उपाय एवं समावेश	३७४
+ परमशिव की दो अवस्थायें	३६१	+ उपाय	३७५
+ आत्मा की तीन अवस्थायें	३६२	+ उपायचतुष्टय	३७५
+ पशु	३६२	+ शाम्भवोपाय का स्वरूप	३७५
+ भेदप्रथा-प्रसविनी माया	३६३	+ ज्ञान और मल : अन्तःसम्बन्ध	३७७
+ मल	३६३	+ शक्तिपात	३७७
+ प्रलयाकल	३६३	+ ज्ञान-श्रेणी और मलकल्पना	३७७
+ विज्ञानाकल	३६३	+ उपाय और ज्ञानतत्त्व तथा मलशोष	३७८
+ पाश	३६३	+ परामर्श	३७९
+ आणव मल	३६३	+ ज्ञान	३७९
+ मल के कारणभूत षट्कञ्चुकों का स्वरूप	३६५	+ ज्ञान का सर्वाधिक महत्त्व	३७९
+ कला	३६५	+ इच्छात्मक उपाय	३८०

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ शाक्तोपाय	३८१	+ देवताविषयक बौद्ध मत	४१३
+ आणवोपाय	३८३	+ लयक्रम	४१३
+ बन्धन का कारण	३८४	+ मन्त्र के बीजाक्षरों से देवता का आविर्भाव	४१४
+ मुक्ति और बन्धन (जैन दर्शन)	३८५	+ बौद्ध कालचक्रयान और देव-मण्डल	४१४
+ मुक्ति के साधन—जैन मार्ग	३८५	+ स्कन्धों के अधिष्ठाता आदिबुद्ध	४१५
+ मुक्ति के उपाय (स्पन्दकारिका)	३८५	+ देवों के कुल	४१५
+ स्पन्दात्मक आत्मबल की प्राप्ति	३८६	+ पञ्चरक्षामण्डल	४१५
+ शुद्धि के उपाय (योगसूत्र)	३८६	+ जगच्चित्र और देवत्वबुद्धि	४१६
+ शुद्धि के उपाय (महार्थमञ्जरी)	३८७	+ देवताबुद्धि	४१८
+ शुद्धि के उपाय (त्रिकदर्शन)	३८७	+ मन्त्र के लक्षण एवं उनका यथार्थ स्वरूप	४१८
+ शुद्धि के उपाय : दीघनिकाय	३८७	+ मन्त्र का स्वरूप	४२०
+ शुद्धि के उपाय : जैन दर्शन	३८७	+ आत्मसत्ता के दो पक्ष एवं मन्त्रानु-सन्धान की दो अवस्थायें	४२०
+ शुद्धि के उपाय : शांकर दर्शन	३८८	+ मन्त्र के व्यापार	४२१
+ पूजा-सामग्रियों के प्रतीकार्थ	३८८	+ त्रिक दर्शन में विभव का स्वरूप	४२१
+ पूर्णाहन्ता के मुख में विश्वविकल्प का निक्षेप	३९५	+ विमर्श का यथार्थ स्वरूप	४२३
+ देवता का स्वस्वरूप	४००	+ मन्त्र के लक्षण	४२३
+ देवतातत्त्व और भावनायोग	४०३	+ मन्त्र एवं शिव के साथ अभेदापत्ति	४२६
+ देवता या भगवान् का यथार्थ स्वरूप	४०३	+ मन्त्रों की स्वनिहित शक्ति की अपरिमेयता	४२६
+ देवता के लक्षण	४०४	+ मन्त्र : चित्तत्त्व की किरणें	४२८
+ देवता का स्वभाव	४०४	+ मन्त्रानुसन्धाताओं की दो अवस्थायें	४२९
+ देवता और उपासक की आत्मा में सामरस्य	४०५	+ विभव	४२९
+ आत्मोपासना पर बल	४०५	+ संकोच	४२९
+ देवोपासना में उपासक के भावों का प्रामुख्य	४०६	+ वाक्चतुष्टय का स्वरूप	४३०
+ योग का स्वरूप	४०६	+ वैखरी वाक् का स्वरूप	४३२
+ विश्व : परमात्मा का योगैश्वर्य	४०७	+ मध्यमा वाक् का स्वरूप	४३३
+ स्वात्मारूप संवित् तत्त्व ही देवता	४०७	+ पश्यन्ती वाक् का स्वरूप	४३३
+ तादात्म्यभावापन्न पूजा का फल	४०९	+ सूक्ष्मा वाक् का स्वरूप	४३३
+ देवता की उत्पत्ति	४१०		
+ मन्त्र और देवता का तादात्म्य	४१२		
+ देवता का आविर्भाव	४१३		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ परा वाक् का स्वरूप	४३४	+ परा वाक् और परबोध	४५१
+ वाक्चतुष्टय का मूल स्वरूप	४३६	+ ज्ञानावतरण और वाक्त्व	४५२
+ वाणियों के नामकरण का आधार	४३७	+ देवाराधनोपयोगी सर्वोच्च मुद्रा का स्वरूप	४५३
+ वाणी और त्रिपुरभैरवी में ऐकात्म्यभाव	४३८	+ सर्वमुद्रात्मिका मुद्रा	४५५
+ परा शक्ति का रूपान्तरण	४३८	+ आत्मविमर्शरूप कल्पद्रुम का परिचय	४५८
+ शक्ति और वाक्त्व	४३९	+ आत्मविमर्शरूप कल्पद्रुम का स्वरूप	४६१
+ नाद	४४१	+ विमर्श कल्पद्रुम का स्वस्वरूप	४६१
+ सर्वोच्च नाद ॐ का उच्चारण	४४१	+ श्री एवं सुखोत्सव का स्वरूप	४६२
+ द्वादश कलात्मक ॐ की मात्रायें	४४२	+ कला के अर्थ	४६३
+ द्वादश कलाओं में मात्रायें	४४२	+ विमर्शकल्पद्रुम में विमर्श का स्वरूप	४६३
+ नाद की चार अवस्थायें	४४२	+ ब्रह्मद्वैतवाद का प्रत्याख्यान	४६४
+ नादनवक के स्थान	४४२	+ परमात्मा का कालातीत एवं मोक्षातीत स्वरूप	४६४
+ वाणियों के नादात्मक रूप	४४२	+ परमबिन्दु का आत्मविभाजन	४६९
+ वाक्त्व का वंशवृक्ष	४४३	+ काल के कारण बिन्दु का आत्मविभाजन	४७०
+ वाणियों का यथार्थ मूल स्वरूप	४४३	+ बिन्दु, नाद, बीज	४७१
+ वैखरी वाक् और उसका स्वरूप	४४४	+ भोग-मोक्षसाहचर्यवाद	४७३
+ भगवती त्रिपुरसुन्दरी के विभिन्न लक्षण	४४४	+ जीवन्मुक्ति का स्वरूप	४७३
+ पञ्चदशाक्षरी विद्या	४४४	+ शिवमार्ग में मोक्ष की दृष्टि	४७४
+ वैखरी के भेद	४४५	+ जगत् एवं वस्तुसत्य की अज्ञेयता	४७४
+ क्रियाशक्ति और वैखरी	४४५	+ परमशिव का प्रकाशक स्वरूप	४७८
+ विराट् पुरुष एवं वैखरी वाक् का तादात्म्य	४४६	+ प्रकाशस्वरूप परमशिव और उसका आनन्द	४७९
+ मध्यमा वाक्	४४६	+ आत्मा की स्थिरता	४८१
+ वाणी के अन्य विभाजन	४४७	+ आत्मा की आनन्दरूपता	४८२
+ सप्तपदी विभाजन	४४७	+ सर्वात्मवाद	४८५
+ सृष्टि के आदि में प्रकट शब्द	४४७	+ सर्वानन्दवाद	४८६
+ महानाद के भेद	४४८	+ आत्मा की सर्वानुस्यूतता	४८६
+ मध्यमा वाक् के भेद	४५०	+ सोऽहं मन्त्र और उसकी साधना	४८८
+ स्थूल मध्यमा	४५०		
+ सूक्ष्म मध्यमा	४५०		
+ पर मध्यमा	४५०		
+ मध्यमा का तात्त्विक मूल स्वरूप	४५१		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ सोऽहं साधना	४९१	+ अजपा मन्त्र का ध्यान	५०६
+ अजपा-जप के प्रकार	४९३	+ अजपा मन्त्र का पुरश्चरण	५०६
+ अजपा-जप की विशेषतायें	४९३	+ अजपा-साधना से प्राप्त सिद्धियाँ	५०६
+ मनुष्य की आत्मविस्मरणावस्था एवं श्वास-प्रश्वास	४९४	+ अजपा मन्त्र एवं उसकी साधना	५०७
+ अजपा-जप का स्वरूप	४९४	+ योगियों एवं सन्तों की साधना में अजपा-जप	५०९
+ 'हंसः' के हकार-सकार का क्रम	४९४	+ अजपा जप एवं कुण्डलिनी	५११
+ हंसः मन्त्र के क्रमविधान में मतभेद	४९४	+ अधिकारभेदानुसार अजपा तत्त्व का स्वरूप	५११
+ हंसः मन्त्र एवं सोऽहं मन्त्र	४९५	+ अधिकारभेद से अजपा की साधना में भी भेद	५१२
+ हंसः मन्त्र की सोऽहं में परिणति	४९५	+ योगिसमाज में प्रचलित कुम्भकात्मक अजपा-पद्धति	५१३
+ जीव का स्वाभाविक मन्त्र एवं स्वाभाविक जप	४९५	+ औपनिषदिक हंसयोग या अजपा-साधना	५१३
+ वायु का सुषुम्णा में प्रवेश और उसके प्रभाव	४९५	+ अष्टदल कमल और वृत्तियाँ	५१६
+ योगशास्त्र में वर्णित चित्तविक्षेप एवं श्वास-प्रश्वास	४९६	+ अजपा-जपविषयक ध्यातव्य बिन्दु	५१७
+ चित्तविक्षेपों के साथ होने वाले अन्य विक्षेप	४९६	+ दर्शन की क्रिया	५१९
+ अजपा-जपसम्बन्धी सिद्धान्त	४९७	+ शिव और शक्ति का विरह	५१९
+ देशगत गतिवैषम्य	४९८	+ शिव-शक्ति के मिलन की अवस्था	५२०
+ सिद्धान्त	४९८	+ अजपा जापसम्बन्धी प्रयोग एवं अनुभव	५२०
+ कालगत विषम गति	४९८	+ विजयकृष्ण कुलदानन्द की अजपा-साधना	५२२
+ सिद्धान्त	४९९	+ श्वास-प्रश्वासात्मक नामजप का वैज्ञानिक रहस्य	५२३
+ श्वासगति	४९९	+ नामाराधन	५२४
+ अजपा जप की पारम्परिक एवं साम्प्रदायिक विधियाँ	५००	+ नामसाधना के कतिपय नियम	५२५
+ समत्ववाद	५०१	+ एक मास में सिद्धिप्राप्ति के उपाय	५२६
+ श्वास की देशपरीक्षा	५०२	+ सूफियों की साधना-पद्धति	५२७
+ हंसः मन्त्र का स्वरूप	५०४	+ बौद्ध ध्यानयोग	५२७
+ सोऽहं और ॐ में अन्तःसम्बन्ध	५०४		
+ अजपा-साधना की विधि	५०५		
+ राघवभट्ट के अनुसार अजपा के न्यासादिक	५०५		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ प्रणवात्मक हंस	५३०	+ योगियों का आनन्द और	
+ अजपा-जपात्मक तान्त्रिक दृष्टि	५३३	आनन्दश्रेणियाँ	५७२
+ विश्वात्मक परमशिव का विश्वातीत		+ शतपथ ब्राह्मण के आनन्दों का	
स्वरूप	५३५	श्रेणी-वर्गीकरण	५७४
+ उपाय और 'योरअरेसु' गाथा का		+ आनन्द की चतुर्दश श्रेणियाँ	५७६
सम्बन्ध	५३८	+ योगियों के आनन्द-स्तर	५७८
+ जगत् और उमा तथा सूक्ष्म		+ आनन्दश्रेणियाँ और चतुर्दशात्मक	
और स्थूल	५३९	सर्ग	५७९
+ परमशिव के स्वरूपामृतपान का		+ सर्ग-वर्गीकरण (सांख्यदर्शन)	५७९
अमित प्रभाव	५४०	+ देवलोक और विदेह तथा	
+ आणवत्व	५४४	प्रकृतिलय	५८०
+ शाक्तत्व	५४४	+ आनन्दानुगता समाधि	५८०
+ दर्पणरूप परमात्मा में प्रतिबिम्ब-		+ विदेहावस्था एवं ब्रह्मलोकपर्यन्त	
स्वरूप जगत्	५४४	सूक्ष्म लोकों का आनन्द	५८१
+ सौगत प्रतिबिम्बवाद का खण्डन	५५२	+ योगियों के विषय-सौख्य और	
+ स्वातन्त्र्यवाद	५५३	उनके द्वारा त्रैलोक्य-स्फुरण	५८१
+ स्वातन्त्र्यवाद का स्वरूप	५५३	+ सर्वानन्दवाद	५८२
+ शिव की अवस्थायें	५५४	+ स्वस्वरूपावस्थान और विवेक	५८३
+ आभासवाद	५५६	+ योग-भोगसाहचर्यात्मक	
+ आभास का द्विपक्षात्मक स्वरूप	५५६	यामली सिद्धि	५८६
+ प्रतिबिम्बवाद	५५६	+ अमृतस्वभाव भाव की प्राप्ति	
+ विश्व, अवभास एवं भैरवसंविद्	५५७	का फल	५९०
+ योगी की अन्तर्मुखता	५५८	+ गुरु के शक्तिपात की महिमा	५९४
+ योगी और अस्थितुष्टय	५६१	+ दीक्षातत्त्व	५९७
+ महासत्ता की स्थिति एवं		+ चाक्षुषी दीक्षा	५९८
अवस्थायें	५६४	+ आणवी दीक्षा	५९८
+ अवस्थाओं के उपभेद	५६५	+ शाक्ती दीक्षा	५९८
+ तुर्यातीतावस्था	५६६	+ शाम्भवी दीक्षा	५९८
+ योगियों का योग-भोगसाहचर्यवाद	५६७	+ बन्धन और मोक्ष	५९९
+ स्वरूपानन्दोन्माद और योगी की		+ देशिक और देशना	५९९
लोकोत्तरावस्था	५६९	+ कटाक्ष	५९९
+ उल्लोक	५६९	+ मन्यानभैरवोक्त अमृतात्मिका	
+ योगी की लोकयात्रा एवं सांसारिक		विद्या की सर्वोच्चता	६००
प्राणियों की लोकयात्रा में भेद	५७०	+ आवागमनात्मक संसरण से मुक्ति	६०५

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
+ हृदय	६०८	+ कुरुक्षेत्र में उपदिष्ट महार्थ	
+ उद्योग	६०९	का स्वरूप	६१९
+ मलों के प्रकारत्रय	६११	+ महार्थमञ्जरी के महार्थज्ञान एवं	
+ बन्धन के कारण	६१२	भगवद्गीता के तत्त्वज्ञान में	
+ मुक्त्यर्थ उपाय	६१२	सामञ्जस्य-प्रतिपादन	६२५
+ समावेश	६१३	+ मन्त्रों के अर्थ	६२६
+ शक्तित्रय और मलत्रय	६१३	+ महार्थतत्त्व	६२६
+ मलों के आधार पर जीवविभाजन	६१४	+ सोमानन्दपाद का सर्वशिववाद	६३०
+ मलों के विधायक पञ्चकञ्जकु	६१५	+ अर्थों के प्रकार	६३०
+ चित् शक्ति की पञ्चकृत्यात्मक		+ महार्थमञ्जरी का सारांश	६३१
आत्माभिव्यक्ति	६१५	+ स्वप्न में उपदेश देने वाली सिद्धा	
+ पञ्चकृत्यों का स्वभाव	६१५	योगिनी कालसङ्कर्षिणी को	
+ कुम्भकार द्वारा घटनिर्माण		अभिवादन	६३१
के सोपान	६१५	+ गाथानुक्रमणी	६४२-६४८